भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–4, अंक–5–6	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा–25.00
गुरुवार, 25 जून' 80	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे–श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.25

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

सनातन वरदायिनी भूमि

दादाखाचर और जीवुबा-लाडुबा की महाराज के प्रति अतीव एकान्तिकी भक्ति की कहानी हम पढ़ चुके है। उनके कारण ही महाराज ने गढडा को अपना स्थान बनाकर पवित्र किया, उनके ही कारण गढडा की 'धेला' नदी उन्मत्त गंगा के पवित्र नाम से तीर्थरूप हो गई, उनके ही कारण गढडा की मिट्‌टी सनातन रूप से वरदायिनी बन गई !

धर्मकार्य में भी आग्रह का अभाव

सौराष्ट्र में सर्वप्रथम मन्दिर महाराज ने गढडा गांव में ही करने का संकल्प किया, उस समय की एक कहानी पठनीय है।

मंदिर का स्थान निर्णित करने के लिए महाराज गढडा मे चारों ओर घूम रहे थे। आखिरकार उनकी दृष्टि में एक सुन्दर स्थान आ गया। 'धेला' नदी के किनारे पहाड़ी पर वह स्थान था। महाराज ने प.भ. हरजी ठक्कर को बुला कर कहा–''यह स्थान हमें पसन्द है, आप देखिए इस स्थान का मालिक कौन है।' हरजी ठक्कर ने कहा ''महाराज ! इस भूमि के मालिक है दादाखाचर और जीवाखाचर। दादाखाचर ने तो शीघ्र कह दिया मैं अपना हिस्सा महाराज को मंदिर के लिए सौंप देता हूँ, किन्तु जीवाखाचर ने स्पष्ट मना कर दिया। महाराज को तो किसी बात की जिद्द नहीं थी। अतः उन्होंने गढडा में मन्दिर बनाने का संकल्प छोड़ दिया।''

सारंगपुर के जीवाखाचर

किन्तु भक्तों के आग्रह के कारण सौराष्ट्र में और स्थानों में भूमि ढूंढने लगे। प्रारम्भ किया कारियाणी से। बाद में वांकिया, कोटडा, लोया, नागडका, पंचाला, कुंडल आदि स्थान भी देखे किन्तु संतोष नहीं हुआ। कुंडल से महाराज सारंगपुर आए, यहाँ के जीवाखाचर, जो महाराज के परम भक्त थे, उन्होंने महाराज का अत्यन्त भक्तिभाव से स्वागत किया और कहाः ''महाराज ! यह सारंगपुर गांव सारा आपका है, आप स्थान पसन्द करके यहाँ मन्दिर का निर्माण कीजिए।'' गढडा का अनुभव विचित्र था और महाराज सबको साथ में लेकर, सबकी प्रसन्नता से ही मन्दिर बनाना चाहते थे; अतः इन्होंने सारे गाँव को–हरिभक्तों और अन्य ग्रामवासियों को बुलाकर सभा की और सबकी सम्मति माँगी। सब प्रसन्न हो गए और कहाः

''महाराज ! इतने बड़े हमारे भाग्य कहाँ से कि हमारे गाँव में आप मन्दिर निर्माण करें ! आप भूमि पसन्द कर

लीजिए। हमारा सहकार पूर्णरूप से आपको प्राप्त होगा।'' जीवाखाचर के सभी परिवारजनों ने भी आग्रह किया।

नाम धेला किन्तु काम सयाने !

तब प्रश्न आया मन्दिर निर्माण करने के लिए आवश्यक पत्थरों का। पत्थर कहां से प्राप्त होगा? जीवाखाचर ने कहाः ''महाराज ! बरवाला के जैन श्रेष्ठी यदि छुट्टी दे तो पत्थर प्राफ करना आसान है। वे श्रेष्ठी थे 'धेलाशा'। आज भी बरवाला ''धेलाशा का बरवाला'' के नाम से सुप्रसिद्ध है। जीवाखाचर धेलाशा के पास पहुँच गए....महाराज की महिमा का गुणगान किया और धेलाशा को सारंगपुर महाराज के समक्ष ले आए। धेलाशा का परम्परागत जातिधर्म जैन था और यह मन्दिर तो भगवान स्वामिनारायण का होने वाला था। किन्तु धेलाशा सेठ अत्यंत सयाने और उदार दिल वाले थे। जब महाराज ने धेलाशा को कहाः

''हम यहाँ मन्दिर निर्माण करना चाहते हैं। आप की प्रसन्नता चाहिए। पत्थर आदि की प्राप्ति में आपका सहकार भी चाहिए। आप देंगे? तब धेलाशा ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहाः

''महाराज ! आसपास के पच्चीस गाँवों में मेरा शासन चलता है। यहाँ मन्दिर हो, इसमें न केवल मेरी अनुमति है, किन्तु पूर्ण रूप से प्रसन्नता भी है। पत्थर आदि की व्यवस्था तो हो ही जाएगी, साथ ही साथ इनको लाने के लिए मेरी बैलगाड़ियों का इस्तेमाल भी आप कर सकते हो।'' महाराज अत्यंत प्रसन्न हो गए और कहाः

''नाम धेला (पागल) है किन्तु सेठ है बहुत सयाने।'' सब प्रसन्न-प्रसन्न हो गए और महाराज ने निर्णय किया कि सारंगपुर में मन्दिर होगा।

इधर गढडा में (जिस दिन से महाराज ने गढडा छोडा था उसी दिन से) जीवुबा-लाडुबा ने अन्नजल का त्याग कर दिया था। जब गढडा में समाचार पहुँचा कि महाराज गढडा में नहीं किन्तु सारंगपुर में मंदिर निर्माण करने जा रहे हैं तब जीवुबा-लाडुबा अत्यंत कल्पांत करने लगी। दादाखाचर महाराज के पास सारंगपुर गए और कहाः

''महाराज ! यदि हमने किसी भी प्रकार का अपराध किया हो तो क्षमा कर दीजिए या शिक्षा या प्रायश्चित दीजिये, किन्तु आप गढडा मत छोडिये। आपने कहा है 'गढडा मेरा है और मैं गढडा का हूँ, यहाँ मेरा नित्य वास होगा।' आप गढडा में मंदिर निर्माण करके वहाँ ही स्थिर रहिये और कहा : महाराज ! हम अपना सर्वस्व आपको समर्पित करते हैं।'' यह सुनकर महाराज की आँख में भी प्रेमाश्रु आ गये और दादाखाचर की निष्ठा, भक्ति और समर्पण की भावना देखकर महाराज ने गढडा में ही मंदिर निर्माण करने की स्वीकृति दे दी।

जीवाखाचर को दिया हुआ वचन कैसे निभाया ?

इस प्रकार महाराज ने जब गढडा में ही मंदिर करने का निर्णय किया तब सारंगपुर वाले परम भक्त जीवाखाचर को अत्यंत दुःख हुआ और महाराज भी इनकी भावना जानते थे। आश्वासन देते हुए महाराज ने कहाः ''जीवाखाचर ! आप दुःखी न हो। यहाँ (सारंगपुर में) तो प्रतापी परमेश्वर का महान धाम भविष्य में निश्चित होगा। यहाँ हम हमारे अक्षरधाम और मुक्तों के साथ नित्य निवास करेंगे और हजारों हरिभक्तों के संघ यहाँ यात्रा करने आयेंगे। जीवाखाचर को कुछ सान्त्वना प्राप्त हुई और दुःखी होते हुए भी इन्होंने महाराज को सारंगपुर से विदाई दी।

महाराज के शब्द अक्षरशः सत्य सिद्ध हुए हैं। ब्र. स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने सं. 1972 में उसी स्थान पे तीन शिखरयुक्त मंदिर की रचना करवा कर अक्षरपुरुषोत्तम और धर्मकुल की मूर्तियों की प्रतिष्ठा की है और अनेक हरिभक्त वहाँ प्रतिदिन यात्रा करने आते हैं। एक और बात भी यहाँ कहनी चाहिये। गढडा में नदी के पहाड़ी वाले इलाके में (जिस स्थान को महाराज ने चुना था और गढडा वाले जीवाखाचर के कारण उस समय मन्दिर नहीं हो सका था वहाँ) भी शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर का निर्माण किया है। यह भव्य मन्दिर तीन शिखर युक्त और संगेमरमर का है।

–क्रमशः

काका हे....अमर रहो।

ता. 12-6-80 का दिन दिल्ली के सांस्कृतिक इतिहास में निश्चित अमर रहेगा, क्योंकि उस दिन दिल्ली और आसपास की जनता ने सर्वप्रथम प्र.ब्र.स्व. प.पू. काकाजी का जन्मदिन बड़े पैमाने पर श्री दिल्ली गुजराती समाज के एम.पी.सी.यु.शाह ओडिटोरियम में मनाया।

गुरुवार का कार्यदिवस (Working day) था तब भी 6.30 वजे से नर-नारियों का विशाल समूह ओडिटोरियम की ओर खिंचा आ रहा था और सात बजे पूरा सभागृह भर गया था। पू. घनश्यामस्वामी, पू. माधवस्वामी आदि संतगण और पू. रमेशभाई, पू. ओमप्रकाश, पू. बाबाभाई आदि ने रंगमंच की जो सजावट करी, वह न केवल कला की दृष्टि से किन्तु अपने आध्यात्मिक प्रभाव की दृष्टि से भी भक्तिभावपूर्ण और अलौकिक थी। 'मुझे दृश्य दिखाई दे रहा है.......' हवा गूँज उठी और धीरे-धीरे परदा उठा। तेज समूह से रंगमंच स्पष्ट हो गया और अक्षरधामरूप मन्दिर में पू. काकाजी की विनीत किन्तु भव्य मूर्ति का दर्शन सबको हुआ.....पूरा सभागृह तालियों से गूँज उठा।

मंदस्वर में ''आज यहीं मंदिर है'' की सुरावली प्रसृत हो रही थी। अपने निजी शोक-व्याधि-चिन्ता का शमन करके यह सुरावली का रसपान प्रत्येक प्रेक्षक कर ही रहे थे कि वहाँ धीरे-धीरे पू. उत्तमस्वामी के कंठ से वेदमंत्रों की मधुरता टपकने लगी। भक्त समुदाय एक आश्चर्य से दूसरे में विलीन हो गया।

यहाँ दरवाजे पर आवाज उठी और भारत सरकार के गृह राज्यमंत्री माननीय श्री योगेन्द्र कुमार मकवाणा, संसद सदस्य श्री ईश्वरभाई चावड़ा और संसद सदस्य श्री शान्तुभाई पटेल ने अन्य संसद सदस्यों के साथ सभागृह में पदार्पण किया। अत्यन्त सम्मान से अतिथियों को रंगमंच पर लाया गया और उनका यथायोग्य सम्मान भी हुआ।

श्री योगेन्द्रकुमार मकवाणा ने 'श्री स्वामिनारायण' फिल्म का अंग्रेजी में स्वागत किया और 'देश-विदेश जाने वाली इस फिल्म द्वारा स्वामिनारायण का शुद्ध सात्त्विक संदेश विश्व की कोटि-कोटि प्रजा के समक्ष जाएगा' यह जानकर हर्ष प्रकट किया। प.पू. काकाजी के 63वें जन्मदिन पर इन्होंने कहाः

''मैं कौन आशीर्वाद देने वाला हूँ? मैं तो आशीर्वाद लेने योग्य हूँ।'' बाद में समयाभाव होते हुए भी उन्होंने पूरी फिल्म देखी और अत्यन्त प्रसन्न वातावरण मे विदाई ली।

फिर श्री ईश्वरभाई चावड़ा की अध्यक्षता में सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। संतमंडली के भजनों के बाद 'योगी डिवाईन सोसाईटी' की दिल्ली शाखा के मंत्री श्री प्रफुल्लभाई झवेरी ने पू. काकाजी का जन्मदिन यहाँ मनाये जाने पर दिल्ली वालों के सद्भाग्य की सराहना की और प.पू. काकाजी को प्रार्थना की कि यह सौभाग्य हमें प्रतिवर्ष प्रदान करें। उन्होंने पू. काकाजी का व्यक्तित्व स्पष्ट किया और उनके जैसे जीवन का समग्रविश्व की प्रजा पर क्या प्रभाव है वह संस्कृत श्लोक के माध्यम से समझाया। अन्य प्रमुख वक्ताओं में डॉ. आर.डी.पटेल (भूतपूर्व कुलपति-वल्लभ विद्यानगर) श्री धरमपालजी, डॉ. महेन्द्रभाई (रीडर-दिल्ली विश्वविद्यालय) और निष्काम कर्मयोगी पू. कांतिकाका के वक्तव्य थे।

इन्होंने प्र.ब्र. स्व.प.पू. काकाजी किस परम्परा के वाहक है यह स्पष्ट करते हुए कहा कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण, अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी, प.पू. भगतजी महाराज, प.पू. जागास्वामी, ब्र.स्व.पू. शास्त्री जी महाराज और गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज की परम्परा आज के युग में पू. काकाजी, पू. पप्पाजी और पू. स्वामिजी की त्रिपुटी में विद्यमान है।

पू. काकाजी के व्यक्तित्व के बारे में डॉ. महेन्द्रभाई दवे ने स्पष्ट कहा कि यह शेर का व्यक्तित्व है और वह शेर को ही प्यार करते हैं। प्र.ब्र.स्व. प.पू.काकाजी का जीवनकार्य दिव्यता के नमूने जगत समक्ष प्रस्तुत करता है। ग्रीक शिल्पी के उदाहरण के माध्यम से उन्होंने समझाया

कि असली शिल्पी संगेमरमर के पत्थर को पत्थर के रूप में नहीं देखता है। वह तो देखता है इसकी भीतर बसी हुई सुन्दरता और दिव्यता को। पू. काकाजी भी मनुष्य के भीतर जो सुन्दरता और जो दिव्यता है उसको ही देखते हैं और परम सहृदयता से, परम प्रेम से मनुष्य की जड़ता को तोड़कर उनकी भीतरी दिव्यता को, उनके ब्रह्मतत्व को खोल देते है।

इन्होंने जोरदार भाषा में अपील की कि प.पू. काकाजी का जन्मदिन हर साल दिल्ली में मनाना चाहिये। दिल्ली में पू. काकाजी का जन्म दिन आज पहली बार मनाया जा रहा है फिर भी यह हॉल इतना भरा हुआ है तो आगे आने वाले वर्षों में क्या होगा

श्री धरमपालजी की वाणी सीधी हृदय से आती थी, अतः हृदयस्पर्शी हो गई ! बड़े-बड़े विद्वानों के वक्तव्य का जो प्रभाव होता है इनसे इस वक्तव्य का प्रभाव अनोखा पडा; क्योंकि धर्मपालजी के वक्तव्य में कहीं भी कृत्रिमता नहीं थी, भक्त के भावविभोर चित्त की सरल अभिव्यंजना थी। इस अवसर पर बम्बई से विशेष रूप से आये हुए प.पू. कान्तिकाका की वाणी दिल्लीवासियों को तृप्त कर गई।

श्री दिनकरभाई देसाई और श्री महेन्द्र 'बापू' ने स्पष्ट किया कि हमारे जीवन में प्र.ब्र.स्व.पू. काकाजी का आगमन एक विशिष्ट घटना है। इन्होंने ही हमें उच्चजीवन के प्रति उजागर किया। जीवन का सही अर्थ (True meaning of LIfe) हमें पू. काकाजी के माध्यम से ही मिला।

प.पू. काकाजी ने सब का धन्यवाद करते हुए सबके प्रेम और आदर को महत्व दिया। अत्यन्त विनीत भाव से इन्होंने कहा कि–''जीवन में मैंने डिग्रियां भी पायी, धन भी पाया किन्तु मुझे दिव्य जीवन की संप्राप्ति मेरे पिता-मेरे गुरु योगीजी महाराज के वरद् सान्निध्य द्वारा ही हुई। 'विद्या, धन, कीर्ति आदि में नहीं किन्तु ब्रह्म भाव में ही जीवन का सारसर्वस्व है'–यह जब स्पष्ट हो गया तब मैंने देखा कि मैं सामान्य हूँ, किन्तु मैं इस पिता का पुत्र हूँ अतः मैं सामान्य नहीं हूँ। एक महान शरण व्यक्ति को कितनी महान बनाती है इसका प्रकट प्रमुख उदाहरण प.पू. काकाजी का जीवन है। इन्होंने कभी नहीं कहा है कि मैं भगवान हूँ। इन्होंने बार-बार स्पष्ट किया है कि मैं तो भगवान का लाडला बेटा हूँ। समर्पण और निष्ठा हो तो कोई भी व्यक्ति ऐसा कर सकता है। यह अहम् नहीं है, विनीतता है। काकाजी को कहना क्या है? सम्प्रदाय से भी ऊपर उठ कर वह कहते हैंः 'आप किसी भी धर्म में विश्वास कीजिये, किसी भी रूप में–राम-कृष्ण-देवी-अरिहंत-किसी भी रूप में श्रद्धा कीजिये, किन्तु वह श्रद्धा असली एवं मूल्यपर्यंतगामिनी, दिल की होनी चाहिये। संसार के प्रति जो आसक्ति है उस आसक्ति का प्रवाह वहां से मोड़ कर परमात्मा की और ही ले जाना है।''

विश्व के किसी भी धर्मानुरागी को इस तथ्य के साथ विरोध नहीं होगा। जीवन में सात्त्विकता का उदय होते हुए ही शरीर, मन, प्राण, बुद्धि स्वच्छ-पवित्र बन जाते हैं और दिव्यता के उदय के लिए व्यक्ति पात्र हो जाती है। उसके बाद जो जीवन है वह दिव्य (अक्षरधाम) की ओर का है। पू. काकाजी ने इसकी अनुमति की है, अतः ही वह निर्भय, निश्चिंत और ब्रह्मस्वरूप है। वे बार-बार कहते हैं 'धर्मनिष्ठा' पर्याप्त नहीं है, प्रकट स्वरूप की निष्ठा होनी चाहिये। धर्म, सम्प्रदाय, परम्परा में निष्ठा कुछ हद तक ठीक है, किन्तु यह बाह्य फ्रेइम है, संसार है। वहाँ ही रुक जाने वाला व्यक्ति धर्म के भी व्यवहार में फँस कर रह जाता है। प्रगट ब्रह्मस्वरूपों मे भी उनकी श्रद्धा कहीं न कहीं रुक जाती है। उदाहरणार्थ वहुतों की श्रद्धा सहजानन्दस्वामी तक ही सीमित रही। कुछ आगे बढ़े किन्तु वे कहीं न कहीं रुक गए।

वास्तविक प्रगट की निष्ठा के अलावा प्रकट ब्रह्म को सम्यक् पहचानना असंभव ही है। अतः पू. काकाजी दिव्य जीवन के प्रति एवं प्रगट की निष्ठा के प्रति अत्यधिक जोर देते हैं। खुली आँख ही ब्रह्मस्वरुप की पहचान देगी। शतप्रतिशत प्रकट की निष्ठा बिना दिव्य दृष्टि खुलती ही नहीं है। सम्प्रदाय निष्ठा भी अन्धापन दे सकती है।

हम तो यही प्रार्थना कर सकते हैं कि हमें सही दृष्टि मिले और पू. काकाजी का हाथ पकड़ कर हम परब्रह्म की ओर अग्रसर हो सकें।

काकाजी का जन्म दिन मनाने का भी यह ही उद्देश्य हो सकता है। उनके लिए नहीं, किन्तु हमारे जीवन की अर्थवत्ता के लिए यह आवश्यक है।

इस प्रसंग पर उत्तर भारत के महान संत पू. कल्याणदेवजी महाराज के सान्निध्य और उनकी सरल, मुधर प्रेमपूर्ण कोमल वाणी सुनने को मिली, यह भी एक और सद्भाग्य था।

प.पू. उत्तमस्वामी के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा ही इस प्रसंग की पूर्णाहुति हुई थी।

एक आनन्द की बात यहाँ प्रस्तुत करनी ही चाहिए कि यह समारोह 3.30 घण्टे से भी अधिक चला किन्तु सभागृह में स्थित किसी व्यक्ति ने उबासी भी नहीं ली थी। रात 10.30 बजे तक पू. काकाजी की वाणी की मृदु वर्षा होती रही किन्तु Pin drop silence नहीं feather drop silence रही। एक दिव्यता से सर्व के अन्तरतार पिरोये गए थे। अक्षरधाम के दिव्य समाज का ही दर्शन था।

बाहर से अनपेक्षित सहृदयीगण आया था। मानो बम्बई पूरा आ चुका था। सवद्धी, लुधियाना से भी भक्त मंडल ने इस मंगल अवसर पर आ कर इस समारोह को शोभायमान किया। संयोजकों ने भी कल्पना नहीं की होगी इतनी संख्या में भक्त आए थे, परन्तु दिल्ली भक्त मंडल के श्री पटेल साहब, प.भ. नवीनभाई, प.भ. हिम्मतभाई, प.भ. जनार्दनभाई, श्री मलिक साहब और वच्छाराज एवं जयसवाल परिवार आदि के योगदान से सब व्यवस्था सहज हो गई।

उत्तर भारत में गुणातीत समाज का प्रसरण

गुजरात का स्वामिनारायण सम्प्रदाय अब गुजरात के बाहर तेजी से प्रवर्तित हो रहा है। दिल्ली में अशोक विहार स्थित योगी डिवाईन सोसाईटी का केन्द्र न केवल दिल्ली वासियों को किन्तु आसपास के लोगों के लिये आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

अब इसने पंख फैलाए हैं और कुतुबमीनार के पास के छतरपुर गाँव में तेजी से दूसरा केन्द्र स्थापित हो रहा है। पू. उत्तमस्वामी और अन्य साधु एवं महेन्द्र 'बापु' के प्रयत्नों से भगवान स्वामिनारायण का गुंजन ग्रामजनता कर रही है। अनेक नर-नारी निरन्तर लाभ ले रहे हैं।

दिल्ली की एक बहन कु. हँसा-एम.ए. ने भागवती दीक्षा लेकर शेष जीवन परमात्मा को समर्पण किया, उस समय विद्यानगर से आई हुई बहनों ने प.पू. काकाजी ने और अन्य सहृदयी भक्तों ने छत्तरपुर की जो यात्रा की उस समय पू. उत्तमस्वामी आदि का परिश्रम देखा और वहाँ के भाई-बहनों की भक्ति देखी इससे लगता है कि अध्यात्मिक क्रान्ति की ज्योति अब ज्वाला बन कर इस प्रदेश में जागृत हो गई है। पू. काकाजी भी दिल्ली आते हैं तो स्थिर नहीं बैठते हैं; कभी लुधियाना, तो कभी कुरुक्षेत्र। धर्म-प्रवर्तन चलता ही रहता है। कभी चार आदमियों के बीच, कभी सभा में, कभी बातचीत, कभी व्याख्यान, कभी शिविर ! अभी-अभी पहाड़ों की रानी मंसूरी जो दुन्यवी आमोद-प्रमोद की नगरी है वहाँ पू. काकाजी की आध्यात्मिक शिविर सुचारु रूप से सम्पन्न हो गई। इसका श्रेय श्री बसीन साहब को देना चाहिये।

भगवान स्वामिनारायण के वचनामृत में हम देखते हैं कि महाराज प्रश्न करते हैं, साधु और हरिभक्त उत्तर भी करते हैं किन्तु अन्तिम समाधान महाराज ही करते हैं। ठीक इसी प्रकार मंसूरी शिविर में प्रश्न उठे और समाधान भी हुआ। पू. कान्तिकाका, पू. महेन्द्र 'बापू' पू. भरतभाई, पू. माधवस्वामी, पू. प्रेमभाई आदि ने चर्चा में भाग लिया। ''अक्षरधाम का सुख देने के लिए संतगण बैठा है। किन्तु हमें इसकी उपलब्धि क्यों नहीं होती है?.... ।'' अनेक उत्तर हुए। पू. काकाजी ने इसका सही समाधान किया कि हम संतपुरुष की उंगली निश्चय और दृढ़ श्रद्धा से पकड़ते नहीं है वह ही कष्ट है। यदि ऐसा किया जाएगा तब प्रश्न ही नहीं रहेगा। परमानन्द की अनुभूति अपने आप होगी।

Regd. No. D (D) 655

.....Swaminarayan's contribution to the refinement of Tantra lies in the positing of the Gunatitabhava in addition to the otehr three already enumerated. The Akshara Brahman manifests Himself on this earth in men of great spiritual stature and through these Spiritual Masters He works out His grace for the upliftment of the downtrodden human race. But this upliftment can happen only on the condition that the sadhaka has unquestioning faith in the Master and implict obedience to His commnads. Like a child that trusts the mother and loves her intensely and obeys the mother and is dependent solely on her, should the sadhaka depend on his guru. God has assured us through His utterances in the scriptures and through innumerable examples that He bestows His gifts freely on all. He is the agent who purilies them and redeems them of their sins. Spiritual history records how the prostitute in Jetalpur and the dacoit Valera Varu were redeemed of their sinful past and obtained the grace of the Lord and thereby emancipation. These miraculous things have happened because there is the infinite love and grace and the abundance of the Lord's free gifts; there is also the loving, childlike implicit faith and surrender and obedience of the Sadhakas. It is only when both these are found that redemption occurs.

-Pujya Kakajee

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	8.7.80	मंगलवार	योगिनी एकादशी, व्रत
2.	दि.	21.7.80	सोमवार	नवमी, श्री हरि जयंती
3.	दि.	23.7.80	बुधवार	देवशयनी एकादशी, निर्जला व्रत, चातुर्मास प्रारम्भ, आज चातुर्मास के विशिष्ट नियम लिए जाते हैं।
4.	दि.	27.7.80	रविवार	गुरुपूर्णिमा-आषाढ़ी पूर्णिमा।

गुरुपूर्णिमा-उत्सव

दिनांक 27 जुलाई' 80, रविवार की प्रातः 9.00 से 11.30 गुरुपूर्णिमा का मांगल्यपर्व अशोकविहार मंदिर में विशिष्ट महापूजा-धून-भजन और सत्संग द्वारा मनाया जायेगा।

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 711838
मुद्रण स्थानः आर.के.प्रिंटर्स, 80डी, कमला नगर, दिल्ली-110007